class - IX

साहित्य-सागर

पद्य भाग - (विनय के पद)

1. कहो को उदार ..... तेरो ॥

पद्यांश - उपरोक्त पंक्तियों में तुलसीदास जी कहते है कि इस संसार में भगवान राम के समान उदार इस संसार में कोई और नहीं है। इनके अतिरिक्त ऐसा और कोई भी नहीं है जो बिना सेवा लिए ही दीन-दुखियों पर करुणा करे। सांसारिक आसक्तियों को त्याग करने वाले, अपनी इच्छाओं का दमन करने वाले उन साधु-मुनियों को भी वह सद्गति प्राप्त नहीं हुई, जो मुर्दे खाने वाले गिद्ध (जटायु) पक्षी तथा जंगली शबर जाति की स्त्री (शबरी) को प्राप्त हुआ था, क्योंकि ये अपने मन में श्री राम को बसाया था अतः ये कृपा श्री राम ने उनपर की थी इसी कारण उनकी सद्गति हो गई। उन पर श्री राम की जो असीम कृपा बरसी उस पर उन्होंने कोई अहसान नहीं दिखाया। विभीषण, रावण के छोटे भाई थे उन्होंने भी राम का अर्थात न्याय का साथ दिया जबकि अपने बड़े भाई रावण जो अन्यायी थे उनका साथ छोड़ दिया।

जो सम्पत्ति रावण ने अपने दस शीश चढ़ाकर शिव जी से प्राप्त की थी, वह भगवान राम ने बड़े संकोच के साथ अर्थात बिना किसी अभिमान के रावण के वध के पश्चात विभीषण को दे दी।

तुलसीदास अपने मन से कहते हैं कि हे मन तू सिर्फ राम का नाम भज क्योंकि संसार के सारे सुख, सारी मनोकामनाएँ उस कृपानिधि के भजन से ही पूर्ण हो सकती है।

२. जाके प्रिय - - - - - - - - - - - - मतो हमारो॥

पद्यांश - तुलसीदास जी कहते है कि जो अपने प्राणों से भी प्रिय हो परन्तु उन्हे श्री राम और माता सीता प्रिय नही है, उसको अपने बहुत बड़े दुश्मन के समान मानकर त्याग देना चाहिए अर्थात उनसे कोई सम्पर्क नही रखना चाहिए। इस बात को कवि अनेक उदाहरणो के द्वारा व्यक्त किया है। प्रह्लाद ने अपनी भक्ति का विरोध करने वाले अपने पिता हिरण्यकशिपु की आज्ञा का उल्लंघन किया। विभीषण अपने बड़े भाई रावण जो राम विरोधी था उसका त्याग किया। राम को वनवास दिलाने वाली, माता कैकयी थी जिनका पुत्र भरत ने अपने माता का त्याग किया क्योंकि वह भी राम विरोधी थी राजा बलि अपने गुरु शुक्राचार्य का त्याग किया क्योंकि उन्होने राजा बलि के भक्ति के खिलाफ राम थे। ब्रज की स्त्रियों अर्थात श्री कृष्ण की गोपियों ने कृष्ण प्रेम में अपने पतियों का परित्याग किया था। उन्होने इस कृष्ण प्रेम के खातिर अपने प्रियजनों को छोड़ा और उनका कल्याण ही हुआ।

तुलसीदास जी का कहना है कि राम जी के साथ प्रेम का नाता या सम्बंध ही सबसे बड़ा है क्योंकि जितना अधिक उनसे प्रेम करोगे, सेवा करोगे उनकी कृपा के उतनी ही अधिक भागीदारी बनोगे। इसे सुरमे को आँखो में सजाने से क्या लाभ जिससे आँख ही फूट जाये। अर्थात राम और सीता के विरोधी व्यक्तियों से प्रेम करने से हानि ही प्राप्त होती है।

तुलसीदास जी का मानना है कि उनके पास यही सम्पत्ति है जो उनके लिए प्राणो से भी प्यारा है जो उनके पूज्य भगवान है।

प्रश्न:1. गीध और शबरी को किसने, कौन-सा स्थान दिया? और क्यों?

उत्तर: गीध (जटायु) के आत्मत्याग और शबरी की भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान् श्री राम ने उन्हे परम पद दिया। जटायु ने सीता की रक्षा करते हुए अपने प्राणो की परवाह नही की थी तथा शबरी ने बड़े भोलेपन से प्रेमपूर्वक राम को अपने चखे हुए मीठे बेर खिलाए थे।

प्रश्न 2. यहाँ किस सम्पति की बात की जा रही है? उसे किसने, किस प्रकार प्राप्त किया था? भगवान् राम ने वह सम्पति किसे दे दी?

उत्तर: यहाँ लंका की सम्पति की बात की जा रही है जिसे रावण ने शिव जी की कठिन तपस्या करके प्राप्त की थी। वह सम्पति राम ने रावण का वध करके विभीषण को दे दी थी।

H.W. प्रश्न 1. 'विनय के पद' नामक कविता के कवि कौन है? वह किसके उपासक थे तथा वे किस प्रकार की भक्ति को महत्व देते थे?

प्रश्न 2. 'मुद मंगलकारी' किन्हे कहा गया है? राजा बलि ने अपने गुरु का परित्याग क्यों और कब किया?

प्रश्न:3. 'अंजन कहा आँख जेहि फूटे' कवि ने इस वाक्यांश का प्रयोग क्यों किया है? समझाकर लिखो?